जैव ईंधन ने किया चारागाह का सफाया

जैव ईंधन का आजकल बहुत बोलबाला है। जैव ईंधन यानी अल्कोहल या अन्य तेल। जहां इसे विश्व की ईंधन समस्या का अचूक इलाज बताया जा रहा है, वहीं ताज़ा खबरों के मुताबिक जैव ईंधन के चक्कर में मध्यवर्ती संयुक्त राज्य के घास के मैदान तबाह हो रहे हैं।

साउथ डैकोटा विश्वविद्यालय के क्रिस्टोफर राइट और माइकल विंबरली ने हाल ही में यूएस के पश्चिमी मक्का उपजाऊ क्षेत्र के पांच राज्यों के उपग्रह चित्रों के अध्ययन में पाया है कि वहां कम से कम 53,000 हैक्टर घास के मैदानों की जगह मक्का और सोयाबीन के खेतों ने घेर ली है। मतलब पहले जिस भूमि पर घास उगा करती थी, आज वहां मक्का और सोयाबीन के खेत हैं। यह परिवर्तन वर्ष 2006 से 2011 के बीच हुआ है। परिवर्तन की सबसे तेज़ रफ्तार साउथ डैकोटा और आयोवा प्रांतों में देखी गई है। इन प्रांतों में प्रति वर्ष 5 प्रतिशत चारागाह खेतों में तबदील हुआ है।

दुख की बात यह है कि मक्का और सोयाबीन की तरफ यह झुकाव इन फसलों के खाद्यान्न मूल्य के कारण नहीं हो रहा है बल्कि इन्हें जैव ईंधन के स्रोत के तौर पर उगाया जा रहा है।

बात सिर्फ चारागाह के नष्ट होकर मक्का व सोयाबीन के खेतों के फैलने तक सीमित नहीं है। इस परिवर्तन का एक असर यह भी हो रहा है कि ज़मीन पर अंडे देने वाले पक्षियों की आबादी में गिरावट आ रही है। साउथ डैकोटा में एक इलाका है जो जंगली मुर्गियों का महत्त्वपूर्ण प्रजनन स्थल है। *प्रेरी पॉटहोल* क्षेत्र के नाम से मशहूर इस इलाके में मक्का के खेत अब नमभूमि से मात्र 100 मीटर दूर रह गए हैं। राइट का कहना है कि उत्तरी अमेरिका के आधे से ज़्यादा बत्तख यहीं प्रजनन करते हैं।

वेंकूवर के टेम्परेट ग्रासलैण्ड्स कंज़र्वेशन इनिशिएटिव के बिल हेनवुड का मत है कि यह निहायत निराशाजनक नज़ारा है। जैव ईंधन के कथित भावी लाभों की उम्मीद में हम वर्तमान के वास्तविक पर्यावरण के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***